FOR MLIS STUDENTS

Course : - Masters of Library and Information Science

(MLIS)

Paper : - Paper-I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science
School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: - Knowledge : Concept and Type

Scanned with CamScanner

ज्ञान : विचार एवं प्रकार
(Knowledge : Concept and Type)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

17.0 उद्देश्य (Objectives)

17.1 परिचय (Introduction)

17.2 ज्ञान (Knowledge)

17.3 ज्ञान की विशेषताएँ (Characteristics of Knowledge)

17.4 ज्ञान के चरण (Stages of Knowledge)

17.5 ज्ञान के प्रकार (Types of Knowledge)

17.6 गर्भित ज्ञान एवं स्पष्ट ज्ञान (Tacit Knowledge Vs Explict Knowledge)

17.7 ज्ञान रूपांतरण का साधन (Modes of Knowledge Conversion)

17.8 सारांश (Summary)

17.0 उद्देश्य (Objective)

प्रस्तुत पाठ में हम ज्ञान के विचार को समझने का प्रयास करेंगे एवं इसके प्रकारों पर प्रकाश डालेंगे। इसके लिए सर्वप्रथम हम विभिन्न विद्वानों के द्वारा ज्ञान के सन्दर्भ में दी गयी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत करेंगे। तत्पश्चात ज्ञान की विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे। ज्ञान के विभिन्न चरणों पर चर्चा करेंगे। हम ज्ञान के विभिन्न प्रकारों को अलग-अलग दृष्टिकोणों के आधार पर चिन्हित करते हुये उन्हें स्पष्ट करेंगे। अन्त में हम ज्ञान के रूपान्तरण के विभिन्न साधनों को निरूपित करते हुये उनका विवरण प्रस्तुत करेंगे।

Scanned with CamScanner

17.1 परिचय (Introduction)

मानव सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ चिन्तिन शीलप्राणि है । चिंतनशील होने के कारण उसके द्वारा नये–नये ज्ञान का सृजन होता रहता है ।

17.2 ज्ञान (Knowledge)

मनुष्य के मस्तिष्क में संगठित और मूल्यांकित सूचनाओं का उद्देश्यपूर्ण प्रयोग ही ज्ञान कहलाता है। यह शब्द एक मनुष्य की समझ के बिल्कुल समानांतर होता है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के लोगों ने ज्ञान के प्रति अपनी समझ को अलग–अलग तरह से दर्शाया है। ज्ञान के सन्दर्भ में विद्वानों के कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं–

- ज्ञान शब्द उस सम्पूर्ण ज्ञान को इंगित करता है जो कि एक मनुष्य के द्वारा उसके जीवनपर्यन्त के प्रयासों के फलस्वरूप एकत्रित किया गया है।
- जो कुछ हमें पता है या जो कुछ हम समझते हैं अथवा जिस सब से हम परिचित हैं, ऐसा सब कुछ ही ज्ञान है।
- ज्ञान कुछ नहीं परन्तु किसी तथ्य को जानने या समझने की स्थिति है।
- विभिन्न लोगों के बीच सामाजिक वार्तालाप ही एक नये ज्ञान की उत्पत्ति करती है।
- ज्ञान मानव सभ्यता द्वारा संरक्षित किये गये सम्पूर्ण विचारों का योग है।
- ज्ञान सम्पूर्ण जगत के विचारों का एक समूह जैसा है।
- विचारों के सन्दर्भ में कुछ नया ग्रहण करने की एक अद्भूत प्रक्रिया ही ज्ञान है।
- ज्ञान उन समस्त विचारों का सम्मिश्रण है जो व्यक्ति उम्र के साथ प्राप्त करता है।
- विचारों का संचय ही ज्ञान की ओर मार्गदर्शित करता है।

17.3 ज्ञान की विशेषताएँ (Characteristics of Knowledge)

सामान्यतः पर मनुष्य के द्वारा व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर अर्जित किये गये ज्ञान की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- अनिश्चितता या अनंत
- निरंतरता
- गतिशील स्वभाव या स्वरुप
- संचयी

The discription may be added.

Scanned with CamScanner

17.4 ज्ञान के चरण (Stages of Knowledge)

ब्लिस के अनुसार ज्ञान के मुख्यत: तीन चरण हैं–

- **विकासात्मक चरण (Developmental Order)**

इस चरण में ज्ञान विविध प्रकार के संस्थाओं, समाजों एवं संस्कृतियों के द्वारा उत्पन्न किया जाता है।

- **शैक्षणिक चरण (Pedagogic Order)**

इस चरण में ज्ञान छोटे छात्रों एवं बच्चों को सिखाया जाता है।

- **व्यवहारिक चरण (Pragmatic Order)**

ज्ञान के इस चरण में अर्जित किये हुये ज्ञान/जानकारी का प्रयोग वर्तमान की समस्यों का समाधान करने में किया जाता है।

17.5 ज्ञान के प्रकार (Types of Knowledge)

ज्ञान को उसके विषय, प्रयोग, अधिगम्यता, उपलब्धता, विषेशताओं, दर्ष्टिकोण एवं संहिताकरण आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकष्त किया जा सकता है–

17.5.1 अधिगम्यता के आधार पर (On the Basis of Accessibility)

- **सार्वजनिक ज्ञान (Public Knowledge)**

  सार्वजनिक ज्ञान वह ज्ञान है जो पढ़ने–लिखने एवं अन्य उद्देश्यों हेतु आसानी से सार्वजनिक रूप से अधिगम्य (Accessible) होता है।

- **निजी ज्ञान (Private Knowledge)**

  यह ज्ञान एक व्यक्ति के द्वारा अर्जित किया गया ज्ञान होता है। इस तरह का ज्ञान बाहरी लोगों के लिये अधिगम्य नहीं होता एवं यह उस व्यक्ति का निजी गुण/सम्पदा होता है।

- **प्रक्रियात्मक ज्ञान (Procedural Knowledge)**

  प्रक्रियात्मक ज्ञान को समाज की विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त अथवा अर्जित किया जाता है।

17.5.2 विचार–विमर्श के आधार पर (On the Basis of Intraction)

- **प्राथमिक ज्ञान (Priori Knowledge)**

  प्राथमिक ज्ञान वह ज्ञान है, जो बाहरी दुनिया के साथ बिना किसी तरह के विचार–विमर्श के उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में इस तरह के ज्ञान के लिये किसी तरह के औपचारिक वार्तालाप की जरूरत नहीं होती। जैसे– सभी कुंवारे अविवाहित होते हैं।

Scanned with CamScanner

- **अनुभव आधारित ज्ञान (Posteriori Knowledge)**

  यह ज्ञान विभिन्न लोगों से औपचारिक विचार–विमर्श के उपरान्त का एक परिणाम है। जैसे– कुछ कुंवारे बहुत प्रसन्न हैं।

17.5.3 उपलब्धता के आधार पर (On the Basis of Availability)

- **सामाजिक ज्ञान (Social Knowledge)**

  वह ज्ञान जो स्वतन्त्र है एव आसानी से सभी व्यक्तियों को उपलब्ध है, ही सामाजिक ज्ञान कहलाता है।

- **व्यक्तिगत ज्ञान (Personal Knowledge)**

  इस प्रकार का ज्ञान एक अकेले व्यक्ति के स्वयं के अधिकार के स्वरूप में होता है। यह ज्ञान सामान्यतः गोपनीय प्रकृति का होता है।

17.5.4 विषय के आधार पर (On the Basis of Subject)

- **तर्कसंगत ज्ञान (Rational Knowledge)**

  इस तरह का ज्ञान निश्चित तर्क अथवा बुद्धि–विवेक पर आधारित होता है।

- **सहज ज्ञान युक्त ज्ञान (Intutive Knowledge)**

  यह ज्ञान एक तरह से सोच/विचार अथवा विचार प्रकिया का ही परिणाम होता है।

- **वैज्ञानिक ज्ञान (Scientific Knowledge)**

  यह किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया का परिणाम होता है।

- **संहिताकरण के आधार पर (On the Basis of Codification)–**

- **गर्भित ज्ञान (Tacit Knowledge)**

  यह अत्याधिक व्यक्तिगत ज्ञान का प्रकार है जो औपचारिकताओं से परे है। इस तरह के ज्ञान को विभन्न दूसरे व्यक्तियों के साथ न तो संचारित किया जा सकता है और न ही बांटा जा सकता है।

- **स्पष्ट ज्ञान (Explicit Knowledge)**

  इस प्रकार का ज्ञान औपचारिक रुप से संहिताबद्ध किया जा सकता है एवं आसानी से दूसरों को अभिव्यक्त किया जा सकता है।

- **अंतर्निहित ज्ञान (Implicit Knowledge)**

  इस प्रकार के ज्ञान को व्यक्त तो किया जा सकता है, परन्तु व्यवहारिक तौर पर यह अभिव्यक्त नहीं किया होता है।

Scanned with CamScanner

17.5.6 दृष्टिकोण के आधार पर (On the Basis of Approach)

- **प्रक्रियात्मक ज्ञान (Procedural Knowledge)**

  इस तरह का ज्ञान किसी व्यक्ति की एक ऐसी समझ का प्रतिनिधित्व करता है कि कैसे एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया को पूरा किया जाए।

- **घोषणात्मक ज्ञान (Declarative Knowledge)**

  यह एक सतही ज्ञान होता है जो आसानी से स्मरण किया जा सकता है। यह एक सचेतन स्थिति में दैनिक प्रयोग वाला ज्ञान होता है, जो प्रत्येक व्यक्ति की अल्पकालिक स्मृति में विद्यमान रहता है।

- **अर्थ सम्बन्धित ज्ञान (Semantic Knowledge)**

  यह बहुत अच्छी तरह से संगठित किया हुआ ज्ञान का प्रकार है जो लम्बे समय तक मानव स्मृति में विद्यमान रहता है।

- **प्रासंगिक ज्ञान (Episodic Knowledge)**

  इस प्रकार का ज्ञान प्रासंगिक या परीक्षण पर आधारित होता है, जो एक प्रयोगात्मक सूचना देता है। इसका प्रत्येक प्रकरण ज्ञान के एक छोटे हिस्से के स्वरूप में दीर्घकालिक स्मृति में विद्यमान रहता है।

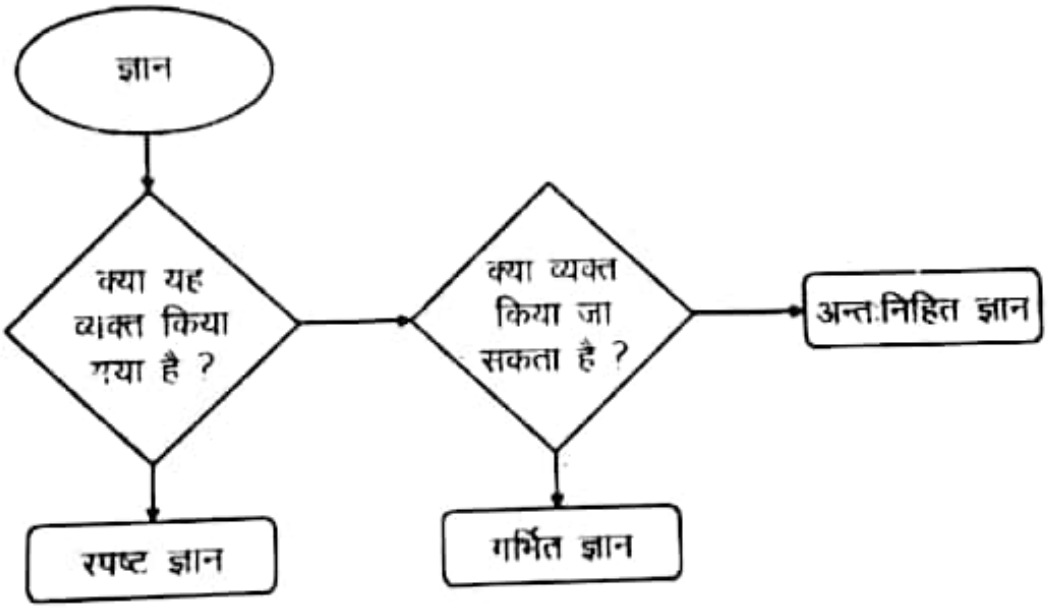

17.6 गर्भित ज्ञान एवं स्पष्ट ज्ञान (Tacit Knowledge Vs Explict Knowledge)

गर्भित ज्ञान एवं स्पष्ट ज्ञान पूरी तरह से एक दूसरे से अलग– अलग नहीं हैं बल्कि ये एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही प्रकार के ज्ञान आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं एवं ये दोनों ही प्रकार के ज्ञान

Scanned with CamScanner

मनुष्य की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में आपस में एक दूसरे को सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हुए विद्यमान रहते हैं।

17.7 ज्ञान रूपांतरण का साधन (Modes of Knowledge Conversion)

विभिन्न प्रकार के ज्ञान के रूपान्तरण के मुख्यतः चार प्रकार हैं एवं ये सभी प्रकार निम्न तरह से प्रदर्शित किये जा सकते हैं–

	गर्भित ज्ञान से	स्पष्ट ज्ञान
गर्भित ज्ञान से स्पष्ट ज्ञान	सामाजीकरण	बाह्यीकरण
	अन्तःक्रियाकरण	संयोजन

17.7.1 सामाजीकरण– गर्भित से गर्भित तक (Socialçation- Tacit to Tacit)

सामाजीकरण मुख्यतः अनुभवों को आदान–प्रदान करने की एक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में एक गर्भित ज्ञान की रचना होती है। उदाहरण स्वरुप– प्रशिक्षुगण अपने शिक्षक के साथ कार्य करते हैं तथा विभिन्न प्रकार के अवलोकन, अनुकर्षति और अभ्यास के माध्यम से लिखते–पढ़ते एवं ज्ञान ग्रहण करते हैं, न कि भाषा एवं अभिव्यक्ति के द्वारा।

17.7.2 बाह्यीकरण– गर्भित से स्पष्ट की ओर (Externalçation- Tacit to Explicit)

बह्यीकरण एक गर्भित ज्ञान को स्पष्ट विचारों के रूप में बोलने की एक प्रक्रिया है। जब हम किसी आकर्षति की अवधारणा को समझने की कोशिश करते हैं, तो हम उससे सम्बन्धित तत्वों के ज्ञान को एक स्पष्ट भाषा/अभिव्यक्ति के रुप में व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में गर्भित अनुभव अथवा ज्ञान को भाषा के माध्यम से स्पष्ट रुप से बोलने का प्रयास किया जाता है।

17.7.3 संयोजन– स्पष्ट से स्पष्ट की ओर (Combination- Explicit to Explicit)

संयोजन ज्ञान तंत्र में विचार धाराओं को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया होती है। इस प्रकार का ज्ञान परिवर्तन विभिन्न प्रकार के अलग– अलग स्पष्ट ज्ञान के संग्रहों को संयोजित करता है। यह मुख्यतः प्रलेखों, सम्मेलनों, टेलीफोन वार्तालाप या नेटवर्क के माध्यम से सम्पन्न होता है।

17.7.4 अन्तःक्रियाकरण– स्पष्ट से गर्भित की ओर (Internalçation- Explicit to Tacit)

अन्तःक्रियाकरण की प्रक्रिया में स्पष्ट ज्ञान को गर्भित ज्ञान में सन्निहित किया जाता है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से 'करके सिखने' की प्रक्रिया की तरह ही होती है। यह प्रक्रिया तब सम्पादित होती है जब मनुष्य में अनुभवों की आन्तरिक रूप से अनुभूति हो।

Scanned with CamScanner

17.8 सारांश (Summary)

इस पाठ में हमने ज्ञान शब्द एवं विचार को समझने का प्रयास किया। हमने ज्ञान से संबन्धित विभिन्न विद्वानों के कथनों को अभिव्यक्त किया। हमने व्यवहारिक तौर पर ज्ञान के विभिन्न प्रकारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। ज्ञान की विभिन्न विशेषताओं को स्पष्ट किया। साथ ही ज्ञान के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करते हुये उसके अलग–अलग दृष्टिकोण से ज्ञान के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा की। पाठ के अन्त में हमने ज्ञान के रूपान्तरण के विभिन्न साधनों पर भी प्रकाश डाला।

Scanned with CamScanner